डॉ. गोपाल राय
और
हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

डॉ० गोपाल राय और हिन्दी कथालोचना

संपादक
पूनम सिन्हा

सह-संपादक
डॉ० त्रिविक्रम नारायण सिंह

प्रतिभा प्रकाशन
प्रतिभा प्रकाशन

ISBN : 978-81-941225-8-6

प्रथम संस्करण

2020

सर्वाधिकार ©

संपादकाधीन

प्रकाशक

प्रतिभा प्रकाशन

केदारनाथ रोड (बिजली ऑफिस के पास)

मुजफ्फरपुर-842001

फोन : 9955658474, 9572980709

अक्षर-संयोजन

अमित कुमार कर्ण

आवरण

शशिकांत सिंह

मुद्रक

जी० एस० ऑफसेट, दिल्ली

मूल्य

350.00 (तीन सौ पचास रुपये)

Dr. Gopal Rai Aur Hindi Kathalochana

Rs. 350.00

अनुक्रम

संपादकीय		–7
धरोहर :		
भाषा चिन्तन : शुद्ध भाषा की खोज	**गोपाल राय**	–13
स्मृति-शेष बंधुवर	**निर्मला जैन**	–22
बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी: डॉ० गोपाल राय	**हरदयाल**	–27
समावेशी दृष्टि से लिखा हिन्दी उपन्यास का इतिहास	**मैनेजर पाण्डेय**	–34
विद्धांग–बद्ध–कोदण्ड-मुष्टि–खर रुधिर-स्राव	**सत्यकाम**	–41
उपन्यास की संरचना : संदर्भ-प्रेमचंद के उपन्यासों की यथार्थवादी संरचना	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–54
हिन्दी कहानी का इतिहास-2 साहित्य भी इतिहास भी	**डॉ. पूनम सिन्हा**	–65
इतिहासकार गोपाल राय	**अमिता पाण्डेय**	–71
आलेख :		
कथा-आलोचना की सैद्धांतिकी और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रेवती रमण**	–77
डॉ० गोपाल राय की कथालोचना	**डॉ. चंद्रभानु प्रसाद सिंह**	–81
नलिनविलोचन शर्मा एवं गोपाल राय की साहित्यदृष्टि : संदर्भ-गोदान	**डॉ. सुधा बाला**	–85
हिन्दी उपन्यासालोचन के हिमालय : डॉ० गोपाल राय	**डॉ. जंगबहादुर पाण्डेय**	–93
गोपाल राय की सृजनात्मकता: कथालोचना की विस्तृत भूमि	**डॉ. संजय पंकज**	–98
हिन्दी कहानी का इतिहास लेखन और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. त्रिविक्रम ना.सिंह**	–102
उपन्यास की संरचना और डॉ० गोपाल राय	**डॉ. रामेश्वर द्विवेदी**	–109

गोपाल राय : एक दृष्टि — **डॉ. राजीव कुमार झा** —116
शेखर : एक जीवनी और गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. धीरेन्द्र प्रसाद राय** —121
मैला आँचल की आंचलिकता:
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. कल्याण कुमार झा** —133
उपन्यास आलोचना की परंपरा और गोपाल राय — **डॉ. संत साह** —137
मैला आँचल में लोकविश्वास के तत्त्वों की
पहचान : डॉ० गोपाल राय — **डॉ. साक्षी शालिनी** —140
साहित्येतिहास-लेखन की कठिनाइयाँ और
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. राकेश रंजन** —144
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल में
स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति — **डॉ. सुशांत कुमार** —153
डॉ० गोपाल राय की औपन्यासिक आलोचना
का अनुशीलन — **डॉ. संध्या पाण्डेय** —157
आंचलिक उपन्यास की अवधारणा और गोपाल राय — **डॉ. चित्तरंजन कुमार** —163
उपन्यास शिल्प और गोपाल राय का विवेचन — **सोनल** —170
गोदान की आलोचना प्रक्रिया और कथालोचक
गोपाल राय — अखिलेश कुमार —176
हिन्दी उपन्यासालोचन और डॉ० गोपाल राय — **डॉ. माधव कुमार** —180
कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पल्लवी** —185
डॉ० गोपाल राय : समीक्षा और साहित्याब्दकोश — **समीक्षा सुरभि** —188
कथालोचक डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में
विष्णु प्रभाकर की कहानियाँ — **डॉ. प्रीति कुमारी** —200
डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की
भाषागत विशिष्टता — **डॉ. इंदिरा कुमारी** —205
हिन्दी उपन्यास का इतिहास और गोपाल राय — **पल्लवी कुमारी** —211
उपन्यास की पहचान मैला आँचल के संबंध
में गोपाल राय की विवेचना — **डॉ. अंशु कुमारी** —216
हिन्दी कहानी का इतिहास और डॉ० गोपाल राय — **विकास कुमार** —220

संस्मरण :

मैं और गोपाल राय — **उषाकिरण खान** —225
इतिहासकार-कोशकार डॉ० गोपाल राय :

एक संक्षिप्त परिचय — **भगवानदास मोरवाल** –227
सुखद स्मृतियों में गोपाल राय — **डॉ. श्रीनारायण प्रसाद सिंह**–232

साक्षात्कार :

डॉ० गोपाल राय का साक्षात्कार
(समीक्षा से साभार) — **डॉ. पूनम सिन्हा** –236
प्रो. सत्यकाम का साक्षात्कार : — **डॉ. पूनम सिन्हा** –243
डॉ० खगेन्द्र ठाकुर का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. सुनीता गुप्ता** –258
डॉ० रामवचन राय का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **डॉ. पूनम सिन्हा** –263
डॉ. माधव कुमार

अरुणकमल का साक्षात्कार : संदर्भ
डॉ० गोपाल राय — **विनीता कुमारी** –268
प्रतिवेदन –271

डॉ० गोपाल राय की दृष्टि में मैला आँचल की स्वातंत्र्योत्तर राजनीति की प्रकृति

–डॉ० सुशांत कुमार

'मैला आँचल' को डॉ० रामविलास शर्मा ने कम्युनिस्ट पार्टी को बदनाम करने वाले उपन्यास के रूप में देखने की कोशिश की है। राजनीतिक पार्टियों की जो आंतरिक वास्तविकताएँ हैं, 'मैला आँचल' उनको उद्घाटित करता है। 'मैला आँचल' को पढ़ते समय ऐसा प्रतीत होता है कि आजादी से पूर्व इस देश के राजनीतिक चरित्र में एक विश्वसनीयता और देश तथा समाज के लिए एक दर्द था। प्रांतीय और राष्ट्र के स्तर पर राजनीतिक पार्टियों की सामाजिक और राजनीतिक विश्वसनीयता के कुछ लक्षण इस उपन्यास में दिखाई देते हैं। इसलिए बड़े नेता लोक मानस में एक अवतारी महापुरुष के रूप में दिखाई देते हैं। महात्मा गाँधी, जवाहरलाल नेहरू आदि नेताओं का एक करिश्माई प्रभाव था, लेकिन यह विडम्बना है कि इस देश के राजनीतिक ताने-बाने में स्थानीय स्तरों पर जाति और शक्ति (बल) की भूमिका निर्णायक है। पूर्णिया जिला में कांग्रेस के सभापति चुनाव में हो रहे जातीय गुटबंदी एवं धनबल के प्रयोग को देखकर बावनदास व्यथित होकर सोचता है "अब लोगों को चाहिए कि अपनी-अपनी टोपी पर भूमिहार, राजपूत, कायस्थ, यादव, हरिजन आदि लिखवा लें।"[1] बावनदास का यह स्वगत कथन भारतीय राजनीतिक संरचना के वास्तविक पहलुओं को उद्घाटित करता है।

सामंतवाद राष्ट्रवाद में और राष्ट्रवाद सामंतवाद में किस तरह संक्रमित हो रहा है और यह संक्रमण गाँव के जीवन को किन-किन बिन्दुओं पर बदल रहा है, शायद यही वह बिन्दु है जिसे 'मैला आँचल' में रेणु उद्घाटित करना चाहते हैं। यह परिवर्तन कैसे घटित हो रहा है, इस परिवर्तन के घटित होने के कारक इतिहास में कहाँ है और इस परिवर्तन का चेहरा कैसा है? रेणु इन प्रश्नों से टकराते हैं। इसलिए सूत्र रूप में इस उपन्यास के

रचनात्मक अभिप्रायों को समझने के लिए एक तो कालखंड, जिसमें स्वाधीनता प्रक्रिया में है, अभी अभी प्राप्त हुई है और स्वाधीनता की प्राप्ति के साथ सत्ता के, राजनीति के, जातियों के किस तरह समीकरण बन रहे हैं रेणु के इस अभिप्राय को कथा आलोचक डॉ० गोपाल राय समझाना चाहते हैं। इसके साथ साथ जो ग्राम्य संरचना की तीन परतें हैं इस कालखंड में इन तीनों का किस तरह का संबंध बन रहा है, संबंधों में संक्रमण की क्या प्रक्रिया है और यह संक्रमण अंततः किस प्रकार का प्रभाव डाल रहा है, इसे को रेणु रचना में रूपांतरित करते हैं और डॉ० गोपाल राय अपनी आलोचना की पुस्तक ‘उपन्यास की पहचान ‘मैला आँचल’ में रेखांकित करते हुए लिखते हैं–“जिस प्रकार बड़े स्तर पर एक राजनीतिक पार्टी दूसरी राजनीतिक पार्टी को उखाड़ने की कोशिश करता है, झूठे प्रचार, चरित्र-हनन, और हिंसा के रास्ते अपनाए जाते हैं, वही सब कुछ मेरीगंज में छोटे स्तर पर होते दिखाया गया है।”[12] अर्थात् राष्ट्रीय व प्रांतीय राजनीतिक पार्टियों की बुराइयों का विकेन्द्रीकरण ग्राम (गाँव) तक हो गया है।

जहाँ तक ‘मैला आँचल’ में राजनीतिक अभिप्रायों का प्रश्न है उसका केन्द्रीय राजनीतिक अभिप्राय यह है कि राजनीति इस देश के विकास और परिवर्तन का उचित माध्यम नहीं है बल्कि वह परिवर्तन की अवरोधक शक्ति है और इस परिस्थिति का विकल्प न रेणु के पास है न इतिहास के पास। इसलिए इस भ्रष्ट होती हुई राजनीतिक चेतना के विरोध में जो भी है वह समाज, इतिहास और राजनीति की मुख्यधारा से अलग होने के लिए या मारे जाने के लिए बाध्य है अर्थात् इस तंत्र में वे ही शक्तिशाली होंगे या बचे रहेंगे जो राजनीति की परिवर्तन विरोधी चेतना को आत्मसात कर लेंगे। इसलिए बावनदास की हत्या एक आपराधिक कृत्य मात्र नहीं है, एक गुण्डे के द्वारा या एक तस्कर के द्वारा एक सत्याग्राही की या एक व्यक्ति की हत्या नहीं है, बल्कि एक समूचे तंत्र के द्वारा परिवर्तन अथवा स्वप्न के प्रति संवेदनशील अथवा प्रतिबद्धता रखने वाले व्यक्ति या व्यक्ति-प्रतीक की हत्या है। समालोचक डॉ० राय लिखते हैं–“यह सब उस दिन होता है जिस दिन सारे देश में गाँधी जी के श्राद्ध का आयोजन है। प्रकट रूप में गाँधी का और अप्रकट रूप में गाँधीवाद का, मूल्यों और विश्वासों का श्राद्ध।”[13] वास्तव में ‘मैला आँचल’ आदर्शों के पतन की एक मर्मांतक त्रासदी है। आदर्शों का स्खलन एक महत्त्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न है। संगठन के प्रति या देश के प्रति जो भी आदर्शवादी दृष्टिकोण से संपृक्त है वह या तो मार डाला जाता है या

निष्कासन का शिकार होता है। बावनदास की हत्या एवं कालीचरण को अपराधी करार देना ये भारतीय जीवन से आदर्शों के निष्कासन की ऐतिहासिक व सामाजिक घटना-प्रतीक है। डॉ० गोपाल राय का मानना है कि-"बावनदास कांग्रेसी राजनीति में बढ़ रहे जातिवाद, जोड़तोड़, धन के प्रभाव आदि से अत्यंत दु:खी है। इस पतन को देखकर वह विक्षिप्त प्राय हो जाता है और उसे अपना जीना भी निरर्थक जान पड़ने लगता है। वह कांग्रेस पार्टी में बढ़ रहे अनैतिक मूल्यों के खिलाफ लड़ते हुए अपने जीवन को दाँव पर लगा देने का निश्चय करता है। उसकी मौत भारतीय राजनीति में नैतिक-मूल्यों की मौत है।"[4] अर्थात् नैतिक-मूल्यों, आदर्शों एवं सत्य के लिए लड़ने वाला मार दिया जाता है, जो जिन्दा हैं, वे मार दिए जाएँगे। मन्नू भंडारी कृत 'महाभोज' उपन्यास का एक पात्र बिंदा जो कहता है, वही समकालीन राजनीति व समाज की सच्चाई है। बावनदास की हत्या का सूत्र बिंदा के कथन में ढूँढ़ा जा सकता है। वह कहता है-"क्योंकि वह जिन्दा था। जिन्दा रहने का अर्थ समझते हैं न आपलोग? आज लोग जिन्दा रहने का अर्थ भूल गए हैं, इसलिए पूछ रहा हूँ।......और जो जिंदा हैं वे मार दिए जाते हैं अपने देश में कुत्तों की मौत।"[5]

'मैला आँचल' में राजनीति के प्रति मोहभंग सिर्फ भाववादी नहीं है अपितु तथ्यों पर आधारित है। जिस दु:स्वप्न का संकेत रेणु 'मैला आँचल' में किया उसी का बीज विस्तार हम 21वीं सदी की भारतीय राजनीति में देख सकते हैं। रेणु इस राजनीतिक परिदृश्य के माध्यम से एक बड़े देश की दुर्भाग्य गाथा का संकेत देते हुए दिखाई देते हैं। राजनीति कुल मिला-जुलाकर सत्ता केंद्रित है अथवा जो राजनीति में बहुत प्रभावशाली है सत्ता उसी के हाथ में है और राजनीति में वही प्रभावशाली है जिसका स्पष्ट जातिगत एवं सामाजिक प्रभुत्व है। राजनीति योग्यता के आधार पर नहीं, देश और समाज को बदलने वाली संघर्ष चेतना के आधार पर नहीं, बल्कि उसके जातिगत आधार पर, राजनीतिक सत्ता में आदमी की भूमिका तय होती है। बावनदास की हत्या कर दी जाती है तो दूसरी तरफ गाँधीवादी विचारधारा के विपरीत व्यवहार करने वाले तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद का समय के अनुकूल मात्र फायदे के लिए रंग बदलने की घटना राजनीति की विश्वसनीयता पर प्रश्न खड़ा करती है। अनेक आलोचकों ने तहसीलदार द्वारा भूमि-वितरण की योजना को विनोबा भावे के भूदान आंदोलन से प्रेरित व गाँधी के 'हृदय-परिवर्तन सिद्धांत' से प्रभावित माना है। परन्तु डॉ० गोपाल राय इसे खारिज करते हुए लिखते हैं-"लगता है, वह तहसीलदार के हृदय-परिवर्तन को उसकी

चालाकी और योजना नहीं, गांधीवादी परिवर्तन मान रहा है। तहसीलदार के प्रति उपन्यासकार बहुत ही सहानुभूतिशील हो गया जान पड़ता है, और सचमुच ऐसा है तो यह उसके वैचारिक खोखलेपन का परिचायक है। इस प्रकार का हृदय परिवर्तन, जिसमें अपने लिए संपत्ति का बीस में से उन्नीस भाग रखकर एक भाग को सारे गांव में बांट दिया जाए, [illegible] नहीं है।

इस तरह स्वातंत्र्योत्तर राजनीति में जनता की भूमिका और परिणति 'जनता' के रूप में कम 'जाति' के रूप में अधिक है। समकालीन राजनीति की त्रासदी यह है कि वह जनता को प्रजातांत्रिक मूल्यों से संस्कारित नहीं करती, उसे नई चेतना से नए स्वप्नों से नहीं जोड़ती, बल्कि पूर्व संस्कारों को दृढ़ करती है और पूर्व संस्कार हैं जातिवाद, अंधविश्वास, अशिक्षा। राजनीति जनता को 'रोबो-पब्लिक' बना रही है जो राजनीतिक पार्टियों के कमांड के अनुसार यंत्रवत व्यवहार कर रही है। मूल वस्तुगत कारण यहाँ है। राजनीति में जनता से जुड़े मुद्दे ठीक उसी प्रकार से गौण हो गए हैं जैसे मेरीगंज की राजनीति से डॉ० प्रशांत द्वारा पहचाने गए रोग-जहालत एवं गरीबी के मुद्दे गायब हैं। यह वही विडम्बना है जो राजनीति को मुद्दा विहीन बनाती है। जो परेशानी है या जिसकी पहचान रेणु कर पाते हैं वह यह है कि इस राजनीतिक तंत्र ने समाज के परंपरागत जातिवादी ढाँचे को कायम रखने के लिए अनेक प्रकार की व्यवस्थाएँ कीं, उन्हीं व्यवस्थाओं में इस देश, समाज और राजनीति के पतन के संदर्भ देखे जा सकते हैं। इस दृष्टि से डॉ० गोपाल राय मैला आँचल को आजादी एवं आजादी के पश्चात् के हिन्दुस्तानी जीवन की एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज मानते हैं।

संदर्भ :

1. मैला आँचल, फणीश्वरनाथ रेणु, पृ.सं.-182
2. उपन्यास की पहचान-मैला आँचल, अनुपम प्रकाशन, पृ.सं.-45
3. उपरिवत्, पृ.सं.-51
4. हिन्दी उपन्यास का इतिहास, डॉ. गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, पृ.-240
5. महाभोज, मन्नू भण्डारी, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लि., पृ.सं.-95
6. उपन्यास की पहचान-मैला आँचल, अनुपम प्रकाशन, पृ.सं.-45

सहायक प्राध्यापक

विश्वविद्यालय हिन्दी-विभाग

बी.आर.ए. बिहार विवि., मुजफ्फरपुर